www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
भारतीय संत-साहित्य : विविध आयाम विशेषांक Page No. : 231-235
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

संत साहित्य की अवधारणा

-डॉ. (श्रीमती) धनेश्वरी दुबे
विभागाध्यक्ष हिन्दी – विभाग, शा. इ. वि. स्नात. महा. कोरबा (छ.ग.)

प्रस्तावना :-

साधु संत का सभ्य समाज के निर्माण में अहम भूमिका होती है। समाज को सुधारने में संतों के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। एक बुरी सोच रखने वाला व्यक्ति संतों के साथ रहने से अच्छा इंसान बन जाता है। संत वे स्पर्श मणी है जिसके पास आते ही दुर्जन व्यक्ति भी सज्जन व्यक्ति की भाषा बोलने लगता है। मनुष्य चाहे कितना ही निष्ठुर, पापी, क्रूर क्यों न हो, संतो के समागम से एक दिन अवश्य बदल जाता है। जिस प्रकार फूलों के पास बैठेंगे तो सुगंध ही मिलेगी उसी प्रकार संतों का संग करने से जीवन अच्छा बनेगा। इस सम्बंध में यह उक्ति अत्यंत सार्थक है :– बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।

अर्थात् सत्संग के बिना विवेक नहीं होता है और राम जी की कृपा के बिना सत्संग सहज में नहीं मिलता है।

संत साहित्य :-

भक्ति काल के निर्गुण पंथ के ज्ञानाश्रयी शाखा को संत साहित्य कहा गया है। संत साहित्य उन संतो द्वारा लिखा गया है जिन्होंने निर्गुण ब्रह्म के प्रति भक्ति भाव रखते हुए बहुदेववाद, अवतारवाद, शास्त्र एवं पुरोहित, मिथ्याडम्बरों का विरोध किया और जातिगत, संप्रदायगत भेदभाव को नकारते हुए सभी मनुष्यों को समान, एक ही ईश्वर का अंश बतलाया। ये संत सीधा–सादा जीवन जीते थे। वे संसार, घर–गृहस्थी मे रहकर भी सांसारिकता से अलिप्त थे। प्रायः ये संत समाज के निचले तबके के थे, उस तबके से जो वर्णाश्रम व्यवस्था में नीच अछूत घोषित था।

संतमत का प्रादुर्भाव :-

भारत में संतमत का प्रारंभ 1267 ईसवी में संत नामदेव के द्वारा हुआ माना जाता है। नामदेव की इस परंपरा को कबीर, कमाल, रैदास (रविदास), धर्मदास, गुरुनानक, दादूदयाल, सुंदरदास, रज्जब, मलूकदास, अक्षर अनन्य, जम्भनाथ, सिंगा जी, हरिदास निरंजनी आदि संतों ने आगे बढ़ाया। इन कवियों ने सामाजिक समरसता के लिए भक्ति का जो आंदोलन अपनी कविताओं के माध्यम से छेड़ा, उसका असर समाज के सभी वर्णों एवं वर्गों पर पड़ा।

संत साहित्य की प्रवृत्तियां :-

1. निर्गुण ब्रह्म की उपासना :-

सभी संत कवि निर्गुण एवं निराकार ब्रह्म में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि ईश्वर तमाम गुणों से ऊपर है, उनके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनका ईश्वर अगम और अगोचर है, अजन्मा और

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)
GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA